इन्सरजेन्सी एवं काउण्टर इन्सरजेन्सी
(Insurgency & Counter Insurgency)

युद्ध विविधताओं से युक्त ऐसी अद्भुत सामाजिक घटना है जिसके गहन अध्ययन से नवीनतम तथ्यों के रहस्य तो खुलते ही हैं, साथ ही सामाजिक, आर्थिक व वैज्ञानिक परिवर्तनों से अटूट रूप से जुड़े होने के कारण युद्ध का स्वरूप भी दिन-प्रतिदिन तदनुसार परिवर्तित होता रहता है। जहाँ एक ओर युद्ध एक वैज्ञानिक संक्रिया के रूप में स्थापित हो गया है, वहीं इसमें भाग्य व संयोग (Luck and Chance) की अभूतपूर्व भूमिका भी यत्र-तत्र देखने को मिलती है। यह भी एक ऐतिहासिक विडम्बना ही है कि अत्यधिक विनाशक होने के बावजूद विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक व सामरिक हितों की पूर्ति हेतु सभ्य मानव समाज युद्ध को एक साधन के रूप में प्रयुक्त करता हुआ आया है। यदि यह कहा जाये कि विभिन्न क्रान्तियों के माध्यम से राष्ट्र-राज्य के वर्तमान स्वरूप के निर्माण व विकास में किसी न किसी रूप में युद्ध की भूमिका रही है, तो अतिशयोक्ति न होगा।

क्रान्ति का अर्थ–जहाँ तक युद्ध के क्रान्तिकारी स्वरूप का प्रश्न है, इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम क्रान्ति को परिभाषित करना आवश्यक प्रतीत होता है। यद्यपि पुरातन पारिभाषिक दृष्टिकोण से शासकों के परिवर्तनों हेतु क्रान्ति को एक माध्यम की संज्ञा दी जाती रही है, किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में इसका अर्थ व क्षेत्र व्यापक हो गया है। क्रान्ति, एक अचानक व त्वरित गति से होने वाली ऐसी उथल-पुथल की कार्यवाही है जो संक्षिप्त, स्थानिक व अनियोजित होती है। यह एक ऐसी दुर्घटना है जिसकी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।[1] परिवर्तन (Change) क्रान्ति का मूल लक्ष्य होता है तथा सम्पूर्ण राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तन की गतिविधियाँ क्रान्ति के द्वारा ही सम्भव हैं। Arther Bauer ने क्रान्ति के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, "समाज के संविधान में परिवर्तनों हेतु बल प्रयोग द्वारा किये गये प्रयत्नों को क्रान्ति कहा जाता है।"[2] जान डान के अनुसार, "किसी राष्ट्र के वर्तमान सरकारी सत्ता को पलटकर एक वैकल्पिक राज्य की स्थापना हेतु की जाने वाली कार्यवाहियों को क्रान्ति कहा जाता है।" अन्य शब्दों में, हम कह सकते हैं कि समाज की जर्जर व्यवस्था में नये स्वस्थ मूल्यों की स्थापना हेतु की जाने वाली ठोस व सुनियोजित, हिंसात्मक व अहिंसात्मक कार्यवाहियों को क्रान्ति कहा जा सकता है।

क्रान्ति की मुख्य विशेषतायें निम्नवत् हैं–

(i) सत्तारूढ़ दल को सत्ताच्युत कर नवीन सत्ता स्थापित करना क्रान्ति का ध्येय होता है। इस सन्दर्भ में यह स्पष्ट कर देना समीचीन होगा कि सैन्य विद्रोह व गृह-युद्धों का भी यह लक्ष्य है, किन्तु ध्यान रहे कि जहाँ एक ओर सैन्य विद्रोह व गृह युद्धों से मात्र सत्ता परिवर्तन सम्भव है, वहीं कान्ति के अन्तर्गत सम्पन्न सत्ता परिवर्तन का प्रमुख लक्ष्य राजनैतिक परिवर्तन के माध्यम से विदेशी आधिपत्य, तानाशाही व अत्याचारी शासन प्रणाली से आजादी प्राप्त करना होता है। Albert Camus ने इस सन्दर्भ में कहा हैं कि–

"Freedom ..... is the motivating Principle behind all revolutions ....."

(ii) शासक–वर्ग को हटाने हेतु बल प्रयोग व हिंसात्मक विधियों का सहारा लिया जाता है। भारत में ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध महात्मा गाँधी द्वारा संचालित अहिंसात्मक आन्दोलन इसका अपवाद है।

(iii) क्रान्ति में सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन काफी त्वरित होते हैं। उल्लेखनीय है कि क्रान्ति तथा सामाजिक व आर्थिक परिवर्तनों में भी पर्याप्त भेद है क्योंकि क्रान्ति के परिणामस्वरूप स्थापित नई सरकार द्वारा

Scanned by CamScanner

शोषित वर्ग के सामाजिक व आर्थिक उन्नयन हेतु जो विभिन्न कदम उठाये जाते हैं उन्हें क्रान्ति न कहकर सामाजिक–आर्थिक विकास कहते हैं। संक्षिप्त व स्पष्ट शब्दों में परिवर्तन–प्रक्रिया को ही क्रान्ति कहा जाता है।

क्रान्ति, वस्तुतः मानव मस्तिष्क की ही उपज है जो शोषण, स्वतन्त्रता के हनन व असन्तोष आदि कारणों से प्रेरित होकर प्रस्फुटित होती है तथा समाज में उत्पन्न हो रही नूतन विचारधारायें इसमें उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। इसमें जन–समूह की गतिविधियाँ पहले प्रारम्भ हो जाती हैं, नेता बाद में प्रकट होते हैं। जब किसी राष्ट्र के नागरिकों द्वारा तत्कालीन शासकों को हटाने के लिये सशस्त्र विधियाँ (हिंसक) अपनाई जाती हैं तो उसे क्रान्तिकारी युद्ध (Revolutionary War), गुरिल्ला युद्धकर्म (Guerrilla Warfare), पक्षपाती युद्ध (Partisan War) अथवा इन्सरज़ेन्सी (Insurgency) जैसे विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है।

इन्सरजेन्सी का अर्थ– उल्लेखनीय है कि आधुनिक युद्धकर्म राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और सैनिक क्रियाओं का एक सम्बद्ध समूह है जिसका उद्देश्य किसी देश की स्थापित सत्ता को उलट कर उसके स्थान पर दूसरी सत्ता स्थापित करना होता है। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आक्रमणकर्ता क्षेत्र विशेष (आक्रमण स्थान) को जनता में आन्तरिक असन्तोष उत्पन्न करने के लिये उनके सैद्धान्तिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा अन्य मतभेदों को उभारता है। ऐसी दशा में आक्रामक को इंसर्जेन्ट (Insurgent) तथा उसके कार्य को इंसर्जेंसी (INSURGENCY) कहा जाता है। इंसर्जेंसी की प्रतिरोधात्मक कार्यवाही को काउन्टर इंसर्जेंसी (COUNTER INSURGENCY) कहा जाता है।

ले० कर्नल **बी० के० आनन्द** ने इंसर्जेंसी को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है–

"Insurgency is not a phenomenon but an improvised process of struggle in which the violence is thoroughly organised and controlled and the intangibles play a crucial role."

Random House Dictionary में *Insurgency* को निम्न रूप से दर्शाया गया है–

"The term Insurgency itself merely conveys an insurrection against the government by a group not recognised as belligerent."

"इंसर्जेंसी एक प्रयास है जो सैनिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग के द्वारा अपने से अधिक शक्तिशाली सैन्य वर्ग (जो कि सरकार होती हैं) के विरुद्ध गुरिल्ला युद्धकर्म को अपनाकर किया जाता है जिसका उद्देश्य शासन को अपने हाथ में लेना होता है।"[3]

A. M. Scott ने बताया है कि, "इन्सर्जेंसी के अंतर्गत संगठित समूह अथवा समूहों द्वारा दीर्घकालिक, अनियमित युद्धकला व संयुक्त राजनैतिक तकनीकों द्वारा राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति से सम्बन्धित प्रयत्न शामिल होते हैं।"[4] अनियमित युद्ध तथा इन्सर्जेंसी में पर्याप्त अन्तर है। जहां अनियमित युद्धकला विशुद्ध रूप से सैन्य गतिविधियों से सम्बिन्धित होती है वहीं इन्सर्जेंसी में सैन्य गतिविधियों के अतिरिक्त राजनैतिक घटक भी शामिल होते हैं। Scott के अनुसार–

Insurgency is irregular warfare plus politics. Irregular warfare is insurgency minus politics.

क्रान्तिकारी युद्ध (Revolutionary war) लड़ने की तकनीक को ही इन्सर्जेंसी कहा जाता है। सफल इन्सर्जेंसी हेतु विद्रोहियों (Insurgents) को अपने सैद्धान्तिक मूल्यों पर काफी स्थिर व दृढ़ होना चाहिये तथा प्रचार को एक प्रमुख अस्त्र के रूप में इस्तेमाल करके सम्पूर्ण जनता में अपने प्रति विश्वास व सहानुभूति (Popular Support) उत्पन्न करने की कोशिश करनी चाहिये। यद्यपि कई विद्वानों ने इन्सरजेन्सी के अतिरिक्त क्रान्ति की तकनीक हेतु अन्य कई पारिभाषिक शब्दों जैसे– कम्युनिस्ट इंसर्जेंसी (Communist

Scanned by CamScanner

Insurgency), मुक्ति संघर्ष (War of Liberation), सशस्त्र संघर्ष (Armed Conflict) व लघु युद्ध (Little War) आदि का उल्लेख किया है तथापि सभी का आशय एक ही अर्थात् क्रान्तिकारी युद्धों के लड़ने की तकनीक (इंसरजेन्सी) से ही है।

इंसर्जेंसी के प्रमुख तत्व–इंसरजेन्सी के सफल संचालन में निम्नांकित तत्व महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं–

(क) ठोस कारण– इन्सरजेन्सी के लिये सबल प्रमुख तत्व आकर्षक कारण होना चाहिये। एक ठोस कारण ही आगे चलकर इंसर्जेन्ट के लिये वास्तविक शक्ति का स्रोत होता है। सर्वोत्तम कारण जनता की बड़ी संख्या को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है जनता का सहयोग परोक्ष से प्रत्यक्ष लक्ष्य की स्पष्टता पर निर्भर करता है कारण ऐसा होना चाहिये जो कि जनता की समस्याओं से सम्बन्ध रखता हो।

स्त्रातेजीय कारण वह होता है जो लम्बे समय तक बना रहता है अथवा उस समय तक रहता है जब तक कि लक्ष्य को प्राप्त न कर लिया जाये। 'समरतन्त्रीय कारण' वह होता है जिससे सीमित लक्ष्य को जल्दी प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। जैसे–जनता की मूल्य वृद्धि की समस्या, अनाज की कमी, पानी अथवा अकाल की समस्या को उभारना तथा उससे उत्पन्न असन्तोष का तुरन्त लाभ उठाना।

इंसर्जेन्ट किसी भी समस्या से लाभ उठाने के लिये स्वतन्त्र होता है, जैसे– सामाजिक, जातीय, आर्थिक आदि। वह अनेक कारणों अथवा समस्याओं को अपने आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं के अनुसार चुन सकता है। इन्सरजेन्ट को यदि एक समस्या दूसरे की अपेक्षा अधिक लाभकारी दिखाई देती है तो पहली को छोड़ देता है। इस कार्य में उसे हिचक नहीं होती है।

यह आवश्यक नहीं है कि समस्यायें ज्वलन्त हों। वह गुप्त समस्याओं को भी जनता के प्रचार के द्वारा ज्वलन्त बना सकता है। समस्यायें कृत्रिम उस समय तक हो सकती हैं, जब तक यह सम्भावना रहती है कि उसे सत्य मान लिया जायेगा। इस प्रकार एक कारण या समस्या इंसर्जेन्ट के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता होती है। संसार में ऐसा कोई देश नहीं हैं जहाँ समस्यायें न हों, इस कारण इंसर्जेन्सी कहीं भी हो सकती है।

(ख) सरकार की शक्ति व कमजोरियाँ –सरकार की शक्ति, कमजोरी तथा उसका संगठनात्मक स्वरूप जैसे तत्व इन्सरजेन्सी के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साम्यवादी देशों की तुलना में प्रजातान्त्रिक देशों में इन्सरजेन्सी की संचालन अपेक्षाकृत सरल होता है क्योंकि प्रजातान्त्रिक देशों में विरोधी दलों के माध्यम से वे संगठन, प्रचार व सदस्यों की भर्ती जैसे कार्य सरलता से कर सकते हैं। राजनैतिक सत्ता की शक्ति व शिथितलता में निम्नांकित तत्व महत्वपूर्ण होते हैं–

(i) समस्याओं का न होना

(ii) राष्ट्रीय सामंजस्य

(iii) नेतृत्व की दृढ़ता

(iv) नेतृत्व को काउण्टर इन्सरजेन्सी का उचित ज्ञान

(v) जनसमुदाय के नियन्त्रण का सशक्त तन्त्र।

जिन राष्ट्रों के उपर्युक्त पहलू सुदृढ़ होते है वहाँ इन्सरजेन्सी गतिविधियों के पनपने में कठिनाई होती है जब कि इन पहलुओं की शिथिलता उनकी गतिविधियों को सरल बना देता है।

(ग) भौगोलिक दशाएँ– इन्सरजेन्सी की सफलता में सम्बन्धित क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियां व दशाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। इन्सरजेन्सी की प्राथमिक अवस्था में क्रान्तिकारियों को अपने अभियान को गतिशील व प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न भौगोलिक तत्वों का सतर्कतापूर्वक अधिक से अधिक लाभ उठाने की चेष्टा करनी चाहिये। निम्नांकित भौगोलिक तत्व इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं–

1. स्थिति
2. क्षेत्र विस्तार
3. भू–विन्यास
4. अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएं

Scanned by CamScanner

5. भू–भाग
6. जलवायु
7. जनसंख्या
8. अर्थव्यवस्था।

पर्वतों व जंगलों से घिरे भू–भाग, छितरी हुई ग्रामीण आबादी, उष्णकटिबन्धीय जलवायु, पर्वतों से युक्त सीमाएं तथा संचार व यातायात रहित क्षेत्र इन्सरजेन्सी गतिविधियों में सर्वाधिक सहायक होते हैं।

(घ)बाह्य सहयोग– यद्यपि इन्सरजेन्सी की प्राथमिक अवस्था में बाह्य सहयोग की कोई विशेष भूमिका नहीं होती है किन्तु इसके विकास व निर्णयात्मक–चरण में बाह्य सहयोग न केवल उत्प्रेरक अपितु निर्णयात्मक तत्व की भूमिका निभाते हैं। यह सहयोग निम्नांकित रूप में होता है–

1. नैतिक समर्थन
2. राजनैतिक समर्थन
3. तकनीकी समर्थन
4. वित्तीय समर्थन
5. सैन्य समर्थन

आतंकवाद व गुरिल्ला संक्रियाओं के सफल संचालन की प्राथमिक अवस्था में क्रान्तिकारी शस्त्र, गोलाबारूद व अन्य उपकरण प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं उबकि वे निर्णयात्मक चरण में ही प्रत्यक्ष सैन्य सहयोग अथवा सैन्य हस्तक्षेप् को उपयोगी मानते हैं।

इन्सरजेन्सी की विशेषताएँ[5]

(क) उद्देश्य (जनसंख्या)– इन्सरजेन्सी का प्रथम उद्देश्य जनता का सहयोग प्राप्त करना होता है। वह इस प्रकार कार्य करता है जिससे काउन्टर इन्सरजेन्सी कार्यकर्ता जनता से अलग-थलग पड़ जायें तथा उसे युद्ध जीतने में सरलता हो जायें। जनता के लिये युद्ध इन्सरजेन्सी की प्रमुख विशेषता हैं और एतदर्थ जनमत प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है।

(ख) इन्सरजेन्सी एक राजनैतिक युद्ध है–प्रत्येक युद्ध सैद्धान्तिक रूप से राजनैतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये लड़ा जाता है। इन्सरजेन्सी में एक राजनीतिक उद्देश्य निहित होता है जिसे इन्सरजेन्सी द्वारा निश्चित किया जाता है।

(ग) शान्ति से युद्ध को क्रमबद्ध हस्तान्तरण– इंसर्जेन्ट नेताओं को क्रान्तिकारी आन्दोलन संगठित करने में बहुत समय लगता है। उसे अपने विरोधी की तुलना में उठने, सैन्य संगठन उसके बरारबर होने तथा उस पर विजय प्राप्त करने में बहुत समय लगता है। अन्य शब्दों में प्रारम्भिक कमजोरी के कारण यह युद्ध लम्बा होता है। उदाहरणार्थ, चीन का क्रांन्तिकारी युद्ध 22 वर्ष, ग्रीस का 5 वर्ष, हिन्द-चीन तथा फिलीपाइन्स में 9 वर्ष, इंडोनेशिया में 5 वर्ष तथा मलाया में 12 वर्ष तक चला।

(ड.) इंसर्जेंसी सस्ती तथा काउन्टर इंसर्जेंसी महंगी हाती है–इंसर्जेन्ट आर्थिक दुर्व्यवस्था, अव्यवस्था पैदा करके जनता में असन्तोष पैदा करके शासन की शक्ति को चुनौती पैदा कर देता है। दुर्व्यवस्था पैदा करना आसान होता है लेकिन व्यवस्था महंगी होती है। जैसे, यदि रेलवे लाइन की फिश हटा दी जाये तथा रेल दुर्घटना हो जाये तो सम्पूर्ण रेलवे पुल आदि की सुरक्षा शासन के लिये महंगी पड़ेगी। इसी प्रकार प्रत्येक कालेज, सिनेमा हाल, पोस्ट आफिस अथवा महत्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा व्यवस्था में बड़ा व्यय होगा। काउन्टर इन्सरजेन्सी करने वाली सरकार को व्यय उठाना पड़ता है क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारी से मुख नहीं मोड़ सकती। व्यय का अनुपात सरकार तथा इंसर्जेन्ट में 20 : 1 का होता है अथवा प्रारम्भिक अवस्था में अधिक होता है।

(च) गैर जिम्मेदार इंसर्जेन्ट तथा जिम्मेदार काउन्टर इंसर्जेन्ट– इंसर्जेन्ट गैर जिम्मेदार होता है क्योंकि न तो उसकी कोई जिम्मेदारी होती है न ही कोई ठोस सम्पत्ति होती है जबकि काउएन्टर इंसर्जेन्ट के पास दोनों

Scanned by CamScanner

ही होती हैं। जब शक्ति सन्तुलन प्राप्त हो जाता है उस उमय काउन्टर इंसर्जेन्ट युद्ध प्रारम्भ करता है क्योंकि केवल सरकार ही लाभकारी लक्ष्य प्रस्तुत कर सकती है यह इंसर्जेन्ट की इच्छा होती है कि वह युद्ध को स्वीकार करता है अथवा नहीं।

(छ) सैद्धान्तिक शक्ति– जनता का मत प्राप्त करने के लिये इंसर्जेन्ट को एक दृढ़ सैद्धान्तिक आधार रखना पड़ता है। दृढ़ सिद्धान्त ही उसके आन्दोलन की मुख्य सम्पत्ति होते हैं। इनको इतना शक्तिशाली होना चाहिये जिससे वह स्वयं की कमजोरी पर विजय प्राप्त कर सके। ऐसा देखा गया है कि काउन्टर इंसर्जेन्ट दृढ़ सैद्धान्तिक विचार वाले इंसर्जेन्ट के सम्मुख पराजित हो जाते हैं।

(ज) प्रचार एक अतिरिक्त शस्त्र– इंसर्जेन्ट की कोई ज़िम्मेदारी नहीं होती इसलिये वे कोई भी उपाय अपना सकते हैं। आवश्यकता पर झूठ भी बोलते हैं अथवा ठगते हैं, या बातों को बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं। उसे कोई सिद्ध करने के लिये नहीं कह सकता। उसका ऑकलन उसके आश्वासनों से होता है न कि उसके कार्यों से होता है। प्रचार उसके लिये एक शक्तिशाली अस्त्र होता है।

सत्ता पक्ष का आकलन उसके कार्यों से होता है न कि उसके आश्वासनों से। इसके लिये प्रचार केवल सूचना प्रदान का साधन होता है। सत्ता पक्ष जनता को धोखा, झूठ या बढ़ा चढ़ाकर बातें कहकर भ्रम में नहीं रख सकता।

(झ) इंसर्जेंसी अंत होने तक अपारम्परिक होती है–इंसर्जेंसी में अपनी कुछ विशेष स्त्रातजीय समस्यायें होने के कारण यह पारम्परिक ढंग का युद्ध नहीं होता जिसके कारण निम्नलिखित हैं–

(i) स्थाई सेना के निर्माण का अर्थ यह नहीं होता है कि उससे गुरिल्ला कार्यवाहियों का अंत हो जायेगा। जबकि दूसरी ओर वे अपना क्षेत्र तथा तीव्रता को बढ़ाकर स्थाई सेना की कार्यवाहियों को सुगम बना सकते हैं, जिससे उनके प्रभावों को बढ़ाया जा सके।

(ii) जनता का सहयोग प्राप्त कर लेने के बाद भी इंसर्जेन्ट उसका प्रयोग अपने हित के लिये नहीं करता। जब तक जनता उसके साथ रहती है वह युद्ध को केवल अपनी शर्तों पर ही स्वीकार करता है।

Scanned by CamScanner